03345

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2009

एम.एच.डी.-4 : नाटक एवं अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *पहला प्रश्न **अनिवार्य** है। शेष **किन्हीं चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. ***किन्हीं तीन*** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **3x12=36**

(a) युद्ध क्या गान नहीं है? रूद्र का श्रंगीनाद, भैरवी का तांडव नृत्य, और शस्त्रों का वाद्य मिलकर एक भैरव संगीत की सृष्टि होती है। जीवन के अंतिम दृश्य को जानते हुए, अपनी आंखों से देखना, जीवन रहस्य के चरम सौन्दर्य की नग्न और भयानक वास्तविकता का अनुभव-केवल सच्चे वीर हृदय को होता है, ध्वंसमयी महामाया प्रकृति का वह निरंतर संगीत है। उसे सुनने के लिए हृदय में साहस और बल एकत्र करो। अत्याचार के श्मशान में ही मंगल का-शिव का सत्य-सुंदर संगीत का समारंभ होता है।

(b) मुझे उस असलियत की बात करने दीजिए जिसे मैं जानती हूँ। ....एक आदमी है। घर बसाता है। क्यों बसाता है?

एक जरूरत पूरी करने के लिए। कौन सी जरूरत! अपने अंदर के किसी उसको.... एक अधूरापन कह लीजिए उसे .... उसको भर सकने की। इस तरह उसे अपने लिए .... अपने में ... पूरा पूरा होना है। किन्हीं दूसरों को पूरा करते रहने में ही ज़िन्दगी नहीं काटनी होती। पर आपके महेन्द्र के लिए ज़िन्दगी का मतलब रहा है... जैसे सिर्फ दूसरों के खाली खाने भरने की ही एक चीज़ है वह/जो कुछ वे दूसरे उससे चाहते हैं, उम्मीद करते हैं या जिस तरह वे सोचते हैं उनकी ज़िन्दगी में उसका इस्तेमाल हो सकता है।

(c) पृथ्वी पर रसमय वनस्पति नहीं होगी शिशु होंगे पैदा विकलांग और कुष्ठग्रस्त सारी मनुष्य जाति बौनी हो जाएगी जो कुछ भी ज्ञान संचित किया है

मनुष्य ने

सतयुग में, त्रेता में, द्वापर में सदा-सदा के लिए होगा विलीन वह गेहूँ की बालों में सर्प फुफकारेंगे नदियों में बह-बह कर आएगी

पिघली आग।

(d) मनुष्य का सांस्कृतिक विकास उसके सामाजिक जीवन से ही संभव हुआ है मानव संस्कृति मानव जीवन से भिन्न नहीं है। मनुष्य ने अपना मानवत्व सामाजिक जीवन द्वारा ही प्राप्त किया है। यह सामाजिक जीवन सदा एक रूप में संगठित नहीं हुआ। भारत में जिस व्यवस्था से लोग बहुत

दिनों से परिचित हैं, वह वर्ण व्यवस्था है। इसे धार्मिक ग्रंथों में ईश्वरकृत भी माना गया है। लेकिन आज भी देश में ऐसे अनेक जन रहते हैं जो पहाड़ों और जंगलों में कबीलों का संगठन बना कर जीवन बिताते हैं और जिनमें वर्ण व्यवस्था नहीं है। समाज शास्त्र के अनुसार यह कबीलों का संगठन, विकास क्रम में वर्ण व्यवस्था से पहले आता है।

(e) मैं देख रहा था, जिनके शरीर में केवल हड्डियाँ ही शेष थीं आज भी उनमें जीवित रहने का साहस था। अकाल आया, बीमारी आई और फिर दूसरे अकाल की गहरी आँधी भी क्षितिज पर सिर उठाने लगी है, किंतु अविचलित हैं यह। किसलिए? इसलिए न कि वह जनता किसी से भी दब नहीं सकती। एक दिन विजेताओं ने इन्हें कुचला था, आज भी मनुष्य का स्वार्थ और भीषण व्यापार इन्हें निचोड़ रहा है किंतु ये तो अभी तक अदम्य, अविजेय हैं।

2. भारतेन्दु-युगीन राजनीतिक-सामाजिक यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में 'अंधेर नगरी' का महत्व प्रतिपादित कीजिए। **16**

3. 'स्कंदगुप्त' नाटक के आधार पर प्रसाद के नाट्य सृजन का मूल्यांकन कीजिए। **16**

4. 'आधे-अधूरे' के नाट्य शिल्प की समीक्षा कीजिए। **16**

5. काव्य-नाटक के रूप में 'अंधायुग' की रचनात्मक विशेषताओं का मूल्यांकन कीजिए। 16

6. 'लोभ और प्रीति' निबंध पर लेखकीय व्यक्तित्त्व के प्रभाव को स्पष्ट करते हुए इस निबंध की भाषा-शैली का मूल्यांकन कीजिए। 16

7. 'कुटज' के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 16

8. रेखाचित्र की विशेषताओं के संदर्भ में 'ठकुरी बाबा' का विश्लेषण कीजिए। 16

9. पठित साक्षात्कार के आधार पर एक साहित्यिक विधा के रूप में साक्षात्कार के महत्व और प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए। 16

10. ***किन्हीं दो*** पर टिप्पणी लिखिए। 8x2=16

(a) नुक्कड़ नाटक

(b) 'तांबे के कीड़े'

(c) 'कलम का सिपाही'

(d) आत्मकथा और जीवनी

- o O o -